शोध मंथन Vol. XII No.III July-Sep. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

पौड़ी गढ़वाल जनपद में जनसंख्या वितरण, घनत्व एवं वृद्धि का भौगोलिक अध्ययन

डॉ० भरतपाल सिंह
भूगोल विभाग,
राजकीय महाविद्यालय चौबट्टाखाल
पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड
ईमेलः *singhbharatpal026@gmail.com*

प्राप्तिः 27.08.2021
स्वीकृतः 14.09.2021

सारांश

अनुकूल जनसंख्या किसी क्षेत्र व राश्ट्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि कोई राश्ट्र बिना जनसंख्या के अपने उपलब्ध संसाधनों का उपयोग नहीं कर सकता। कोई भी प्राकषतिक तत्व तभी संसाधन कहलाता है जब वह मानव की किसी आवश्यकता की पूर्ति करता है। पौड़ी गढ़वाल जनपद पूर्णतः पर्वतीय भू–भाग है। भौतिक विशमता के कारण पौड़ी गढ़वाल जनपद में तीव्र ढाल एवं उच्च उच्चांश वाले क्षेत्रों में विरल जनसंख्या पाई जाती है जबकि घाटी क्षेत्र एवं मध्यम उच्चांश व कम ढाल वाले क्षेत्रों में अधिक जनसंख्या निवास करती है। पौड़ी गढ़वाल जनपद में कुल जनसंख्या (2011) 687271 है जिसमें पुरूश 47.55ः तथा महिला 52.45ः है। जनपद में जनसंख्या घनत्व (2011) 88 व्यक्ति प्रति वर्ग कि0मी0 तथा जनसंख्या वषद्धि (2001–2011)–1.41ः है। जनपद में 2001–2011 के मध्य जनसंख्या में–1.41ः ह्रास हुआ है जिसका प्रमुख कारण जनसंख्या का प्रवास करना है। पौड़ी गढ़वाल जनपद मे केवल दो (02) विकास खण्डों थैलीसैंण (+5.39ः) एवं दुगड्डा (+1.57ः) में जनसंख्या वषद्धि हुई जबकि अन्य सभी विकास खण्डों में जनसंख्या का ह्रास हुआ है।

मूल बिन्दु

जनसंख्या, जनसंख्या वितरण, जनसंख्या बषद्धि, संसाधन, नगरीय करण, व्यवसाय, प्रजाति, प्राकषतिक तत्व, शिवालिक श्रेणी, घाटी, स्पर, कटक, सीढ़ीनुमा खेत, मंडवा, झंगोरा, गहथ, खनन, उद्योग, व्यापार, परिवाहन।

प्रस्तावनाः–

जनसंख्या का अध्ययन भूगोल के अन्तर्गत महत्वपूर्ण पहलू है। जिसके अन्तर्गत जनसंख्या के विभिन्न तत्वों में पायी जाने वाली क्षेत्रीय भिन्नता का क्रमबद्ध विश्लेषण किया जाता है। जनसंख्या अध्ययन के अन्तर्गत जनसंख्या की निरपेक्ष संख्या (जनसंख्या का वितरण एवं घनत्व), जनसंख्या की गत्यात्मकता (प्रजननता, मर्त्यता, जनसंख्या परिवर्तन, स्थानान्तरण), जनसंख्या लक्षण (भौतिक लक्षण – आयु, लिंग, प्रजाति, आर्थिक लक्षण – आय, उद्योग, व्यवसाय, सामाजिक–सांस्कषतिक लक्षण–वैवाहिक, स्थिति, परिवार, ग्रामीण–नगरीय अनुपात (नगरीकरण), साक्षरता, भाषा, धर्म, जाति, राष्ट्रीयता आदि), जनसंख्या–संसाधन सम्बन्ध (अनुकूलन जनसंख्या, जनाधिक्य, जनाल्पता, जनसंख्या दबाव, जनसंख्या – संसाधन प्रदेश, जनसंख्या नियोजन एवं जनसंख्या नीतियां (जनसंख्या नियोजन, जनसंख्या नीति आदि) का अध्ययन किया जाता है।[1]

किसी भी क्षेत्र प्रदेश व राष्ट्र के जनसंख्या वितरण, घनत्व एवं वृद्धि को मुख्य रूप से प्राकृतिक कारक जलवायु, भौतिक बनावट/स्थाकृति, मिट्टी, खनिज पदार्थों की उपलब्धता, जलापूर्ति, स्थिति एवं अभिगम्यता, मानवीय कारक आर्थिक–आखेट, पशुपालन, कृषि, खनन, उद्योग, व्यापार, परिवहन, विविध सेवायें, सामाजिक–सांस्कृतिक कारक, राजनीतिक कारक तथा जनांकिकीय कारक प्रभावित करते हैं।[2]

सभी प्रकार के संसाधनों में मानव जनसंख्या महत्वपूर्ण संसाधन है मानव ही अपनी ज्ञान, बुद्धि, तकनीकी ज्ञान के आधार पर किसी प्राकृतिक तत्व को संसाधन बनाता है कोई भी प्राकृतिक तत्व तब ही संसाधन की श्रेणी में आता है जब वह मानव की किसी आवश्यकता की पूर्ति करता है।

पौड़ी गढ़वाल जनपद हिमालय क्षेत्र के लघु हिमालय एवं शिवालिक श्रेणी में अवस्थित मुख्यतः पर्वतीय जनपद है। यह जनपद उत्तराखण्ड राज्य के गढ़वाल मण्डल में स्थित है। जनपद में एक ओर उच्च पर्वत श्रेणियां तथा दूसरी तरफ घाटियां कोटद्वार व श्रीनगर गढ़वाल अवस्थित है। जनपद में सभी प्रकार की स्थलाकृति– पर्वत श्रेणी, पहाड़ी, घाटी, स्पर, कटक आदि पाये जाते हैं। जनपद में घाटी क्षेत्र के साथ ही स्पर, पहाड़ी, कटक में सीढ़ीनुमा खेत बनाकर कृषि कार्य किया जाता है। पौड़ी गढ़वाल जनपद की प्रमुख फसलें–धान, गेंहूँ, जौ, मंडुवा, झंगोरा, सरसों, विभिन्न दालें–गहथ, राजमा, उड़द, तोर प्रमुख है, इसके साथ विभिन्न मौसमी सब्जियों का भी उत्पादन किया जाता है।

पौड़ी गढ़वाल जनपद की कुल जनसंख्या (1991) 6,77,555; (2001) 697078. तथा (2011) 687271 है, जनपद की जनसंख्या वृद्धि (2001–2011) –1.41% है। 2011 के अनुसार कुल जनसंख्या का 47.55% पुरूष तथा 52.45% स्त्रियां हैं। जनपद में विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता है लेकिन अभी इन संसाधनों का वैज्ञानिक उपयोग नहीं हो सका है जिनसे इस जनपद का सम्पूर्ण विकास नहीं हो सका है।

अध्ययन विषय एवं क्षेत्र का चयनः–

प्रस्तुत शोध पत्र का शीर्षक ''पौड़ी गढ़वाल जनपद में जनसंख्या वितरण, घनत्व एवं वृद्धि का भौगोलिक अध्ययन'' है। पौड़ी गढ़वाल जनपद $29^0 20'$ उ0 अक्षांश से $30^0 15'$ उ0 अक्षांश तथा $78^0 10'$ पूर्वी देशान्तर से $79^0 10'$ पूर्वी देशान्तरों के मध्य है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 5329 वर्ग कि0मी0 है। जनपद का लगभग 90% से अधिक भू–भाग पर्वतीय है। जनपद के उत्तर में टिहरी गढ़वाल, रूद्रप्रयाग एवं चमोली, पूर्व में अल्मोड़ा एवं नैनीताल, दक्षिण में उत्तर प्रदेश तथा पश्चिम में हरिद्वार एवं देहरादून जिला है। प्राचीन काल में इस जनपद में छोटे–बड़े अनेक गढ़ (किला) थे, ये सामन्त राजा छोटे–छोटे ठाकुर थे। 15वीं शताब्दी में चांदपुर के राजा अजयपाल ने इन गढ़ों पर विजय प्राप्त कर अपने अधीन कर लिया, फलस्वरूप संयुक्त गढ़वाल राज्य की स्थापना हो गयी। जो कि वर्तमान में पौड़ी गढ़वाल जनपद है। पौड़ी गढ़वाल का दक्षिणी भाग समतल है जिसे तराई–भाबर के नाम से जाना जाता है। पर्वतीय भाग में शिवालिक एवं लघु/मध्य हिमालय पर्वत श्रेणियां है। पौड़ी गढ़वाल जनपद की प्रमुख नदी, नयार नदी है जो पूर्वी नयार तथा पश्चिम नया दो शाखाओं में विभाजित है। इन नदियों का उद्गम स्त्रोत दूधातोली पर्वत है। पौड़ी गढ़वाल जनपद में 15 विकासखण्ड, 12 तहसील, 1 उपतहसील, 118 न्याय पंचायतें, 1208 ग्राम पंचायतें तथा 3,142 आबाद ग्राम हैं।

अध्ययन का उद्देश्यः–

प्रस्तुत शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य पौड़ी गढ़वाल जनपद के जनसंख्या वितरण, घनत्व एवं वृद्धि का भौगोलिक कर पर्वतीय क्षेत्र के जनसंख्या अध्ययन में अपना सहयोग करना है, जिससे जनपद के जनसंख्या सम्बन्धी विभिन्न पहलुओं को बुद्धिजीवियों, शोधार्थियों तथा भूगोलवेत्ताओं के सामने लाया जा सके।

अध्ययन विधिः–

1. सबसे पहले शोध पत्र से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रह किया गया है आंकड़ों को अर्थ एवं संख्या विभाग पौड़ी गढ़वाल से लिया है।
2. आंकड़ों को संग्रह करने के बाद आंकड़ों को वर्गीकृत एवं तालिकाबद्ध किया गया है।
3. अध्ययन विषय से सम्बन्धित विभिन्न महत्वपूर्ण तथ्यों को मानचित्रों, आरेखों आदि के द्वारा दर्शाया गया है।
4. शोध पत्र को लेखबद्ध करने के लिए सम्बन्धित शोध–पत्रों, प्रलेखों, सन्दर्भ ग्रथों का अध्ययन किया गया है।

पौड़ी गढ़वाल जनपद की कुल जनसंख्या (2011) 68,72,71 तथा 2001 के अनुसार 697078 है। 2011 में कुल जनसंख्या का 47.55% (326829) पुरुष तथा 52.45% (360442) महिलायें है। जबकि 2011 के आधार पर उत्तराखण्ड में कुल जनसंख्या का 50.94% पुरूष

मानचित्र सं0- 01

पौड़ी गढ़वाल जनपद अवस्थिति मानचित्र

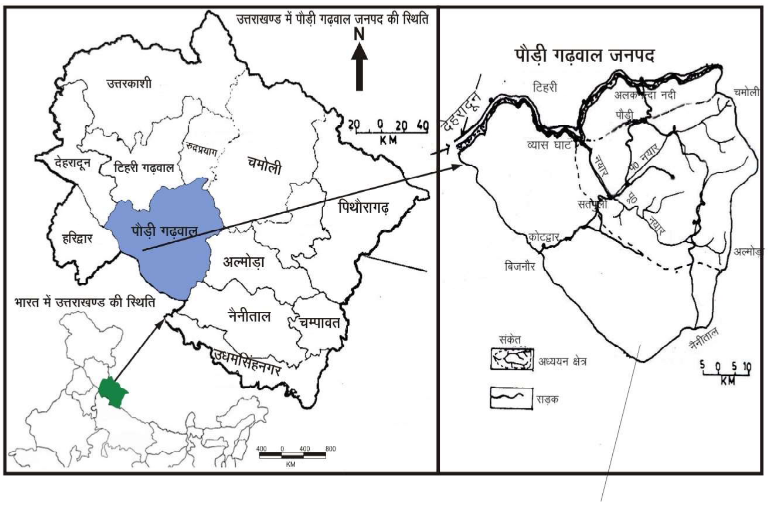

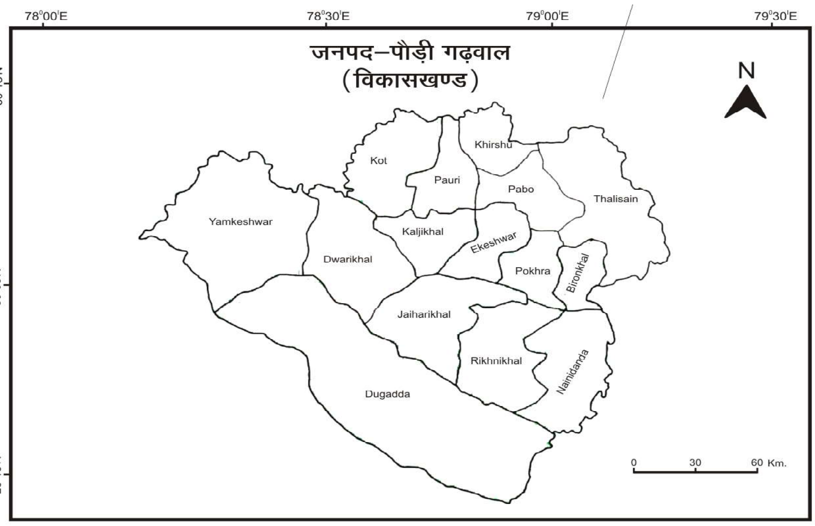
जनपद–पौड़ी गढ़वाल
(विकासखण्ड)
N
78°00'E
78°30'E
79°00'E
79°30'E
30°15'N
30°00'N
29°45'N
Khirshu
Kot
Pauri
Pabo
Thalisain
Yamkeshwar
Kaljikhal
Dwarikhal
Ekeshwar
Pokhra
Bironkhal
Jaiharikhal
Rikhnikhal
Nainidanda
Dugadda
0 30 60 Km.

मानचित्र सं0–02

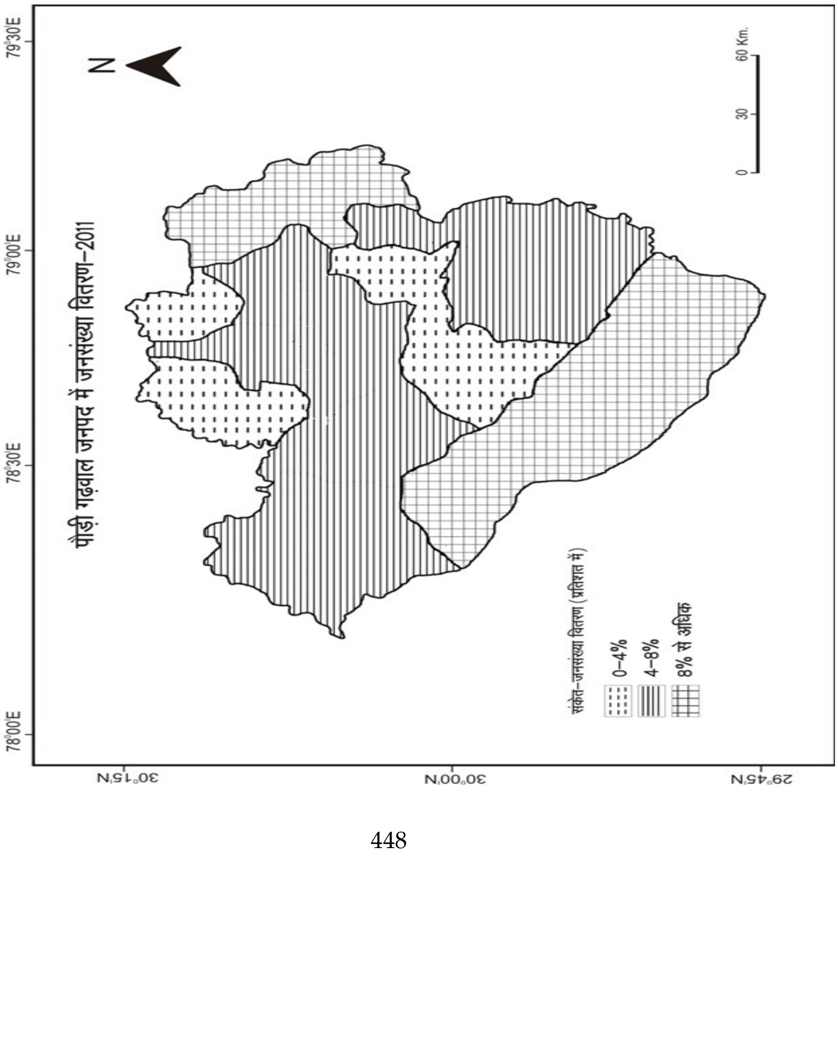
पौड़ी गढ़वाल जनपद में जनसंख्या वितरण–2011
N
0 30 60 Km.
संकेत–जनसंख्या वितरण (प्रतिशत में)
0–4%
4–8%
8% से अधिक
79°30'E
79°00'E
78°30'E
78°00'E
30°15'N
30°00'N
29°45'N

व 49.06% महिलायें तथा पूरे देश भारत वर्ष में कुल जनसंख्या का 51.51% पुरुष तथा 48.43% महिलायें हैं। विकासखण्ड स्तर पर पौड़ी जनपद में 2011 के अनुसार सबसे अधिक जनसंख्या दुगड्डा 15.46% (106267) तथा सबसे कम जनसंख्या पोखड़ा 3.08% (21199) में निवास करती हैड़ी गढ़वाल जनपद में 83.60% ग्रामीण जनसंख्या तथा 16.40% नगरीय जनसंख्या (2011) है।

पौड़ी गढ़वाल जनपद में 83.60% ग्रामीण जनसंख्या तथा 16.40% नगरीय जनसंख्या (2011) है। पौड़ी गढ़वाल जनपद के जनसंख्या वितरण को तालिका संख्या 01, 02 तथा मानचित्र संख्या 02 में दर्शाया गया है–

पौड़ी गढ़वाल जनपद में जनसंख्या (1901–2011)

तालिका संख्या – 01

वर्ष	कुल जनसंख्या	पुरूष	महिला/स्त्रियाँ
1901	2,83,760	1,39,657	1,44,103
1911	3,16,938	1,55,650	1,61,288
1921	3,20,602	1,53,872	1,66,730
1931	3,52,782	1,70,473	1.82,309
1941	3,97,867	1,91,598	2,06,269
1951	4,22,653	1,97,784	2,24,869
1961	4,82,327	2,22,892	2,59,435
1971	5,53,028	2,61,054	2,91,974
1981	5,75,208	2,67,810	3,07,398
1991	6,77,555	3,29,193	3,48,362
2001	6,97,078	3,31,061	3,66,017
2011	6,87,271	3,26,829	3,60,442

स्रोत – अर्थ एवं संख्या विभाग पौड़ी गढ़वाल (सांख्यिकी पत्रिका) 2011

पौड़ी गढ़वाल जनपद में जनसंख्या – 2011

तालिका संख्या – 02 (विकासखण्ड स्तर पर)

क्र0 सं0	विकासखण्ड	क्षेत्रफल (वर्ग कि0मी0)	कुल जनसंख्या	पुरूष	महिला	कुल जनसंख्या (%) में
1	कोट	186	23,754	11,242	12,512	3.46
2	कल्जीखल	239	29,287	13,253	16,034	4.26

3	पौड़ी	149	28,694	13,476	15,218	4.18
4	पबो	444	34,645	15,462	19,183	5.04
5	थलीसैण	664	59,806	27,435	32,371	8.70
6	बिरोंखाल	249	40,915	18,094	22,821	5.93
7	द्वारीखाल	685	33,880	15,541	18,339	4.93
8	दुगड्डा	275	10,6267	51,685	54,582	15.46
9	जयहरीखाल	299	26,493	12,338	14,155	3.85
10	एकेश्वर	173	28,035	12,815	15,220	4.08
11	रिखणीखाल	336	29,466	13,437	16,029	4.29
12	यमकेश्वर	656	36,665	17,493	19,172	5.33
13	नैनीडांडा	275	32,937	14,880	18,057	4.79
14	पोखड़ा	141	21,199	9372	11827	3.08
15	खिर्सू	304	26,731	13092	13639	3.89
16	समस्त विकासखण्ड	5075	558774	259615	299159	81.30
17	वन क्षेत्र	-	11568	6235	5333	1.68
18	नगरीय क्षेत्र	254	116929	60979	55950	17.01
	योग जनपद	5329	687271	326829	360442	100.00

स्रोत – सांख्यिकी पत्रिका अर्थ एवं संख्या विभाग, पौड़ी गढ़वाल

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि विकासखण्ड स्तर पर पौड़ी गढ़वाल जनपद में सबसे अधिक जनसंख्या दुगड्डा 15.46% (1,06,267) तथा सबसे कम पोखड़ा 3.08% (21199) में है।

किसी क्षेत्र, प्रदेश व राष्ट्र के क्षेत्रफल एवं जनसंख्या के अनुपात को सामान्यतः जनसंख्या घनत्व कहा जाता है। जनसंख्या घनत्व भूमि पर जनसंख्या के दबाव को प्रदर्शित करता है। यह भूमि प्रति इकाई क्षेत्रफल पर जन दाब को व्यक्त करता है।

किसी भी क्षेत्र, प्रदेश व राष्ट्र में जनसंख्या के भरण–पोषण के लिए आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता होती है जो कृषि, पशुपालन, खनन, उद्योग, व्यापार, परिवहन, सेवाओं आदि विभिन्न व्यवसायों से प्राप्त होते हैं। उपलब्ध प्राविधिकी के अनुसार किसी देश या प्रदेश में कितने मनुष्यों के पोषण की क्षमता है ? इसकी जानकारी जनसंख्या के घनत्व द्वारा ही प्राप्त होती है।

जनसंख्या घनत्व के विभिन्न प्रकार हैं– अंकगणितीय घनत्व, कायिक घनत्व, कषषि घनत्व, आर्थिक घनत्व, पोषण या पौष्टिक घनत्व। सामान्यतः जनसंख्या घनत्व को निम्न सूत्र द्वारा ज्ञात किया जा सकता है –

$$\text{जनसंख्या घनत्व} = \frac{\text{प्रदेश की कुल जनसंख्या}}{\text{प्रदेश का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल}}$$

पौड़ी गढ़वाल जनपद मुख्यतः पर्वतीय क्षेत्र है जिसके विभिन्न भू–स्वरूपों में जनसंख्या घनत्व में अन्तर स्पष्ट पाया जाता है। घाटी क्षेत्रों, तराई–भाबर क्षेत्र में अधिक घनत्व पाया जाता है। जबकि उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में कम घनत्व पाया जाता है। जनपद के अधिक व तीव्र ढाल क्षेत्रों में जनसंख्या का पूर्णतः अभाव है क्योंकि ये क्षेत्र मानव बसाव के अयोग्य हैं।

पौड़ी गढ़वाल जनपद में जनसंख्या घनत्व 127 (1991) 131 (2001) तथा 129 (2011) व्यक्ति प्रति वर्ग कि0मी0 है। विकासखण्ड स्तर पर 2011 के अनुसार सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व दुगड्डा (386 व्यक्ति/वर्ग कि0मी0) तथा सबसे कम द्वारीखाल (49 व्यक्ति प्रति वर्ग कि0मी0) है। जनपद के जनसंख्या घनत्व को निम्न **तालिका संख्याा 03** एवं **मानचित्र संख्या 03** में दर्शाया गया है–

पौड़ी गढ़वाल जनपद में जनसंख्या घनत्व – 2001 एवं 2011

तालिका संख्या–03

क्रं0 सं0	विकासखण्ड	क्षेत्रफल (वर्ग कि0मी0)	जनसंख्या		जनसंखया घनत्व (व्यक्ति/वर्ग कि0मी0)	
			2001	**2011**	**2001**	**2011**
1	कोट	186	25579	23754	138	128
2	कल्जीखाल	239	33504	29287	140	123
3	पौड़ी	149	30482	28694	205	193
4	पाबौ	444	37294	34645	84	78
5	थलीसैण	664	56746	59806	85	90
6	बिरोंखाल	249	46144	40915	185	164
7	द्वारीखाल	685	42084	33880	61	49
8	दुगड्डा	275	104625	106267	380	386
9	जयहरीखाल	299	31590	26493	106	89
10	एकेश्वर	173	32649	28035	189	162
11	रिखणीखाल	336	33464	29466	100	88
12	यमकेश्वर	656	41213	36665	63	56
13	नैनीडांडा	275	36308	32937	132	120
14	पोखड़ा	141	24806	21199	176	150
15	खिर्सू	304	23995	26731	79	88

स्रोत – सांख्यिकी पत्रिका पौड़ी गढ़वाल (अर्थ एवं संख्या विभाग) 2011

पौड़ी गढ़वाल जनपद में जनसंख्या घनत्व (ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र) – 2001, 2011

तालिका संख्या –04

क्रं0 सं0	क्षेत्र	क्षेत्रफल (वर्ग कि0मी0)	जनसंख्या		जनसंखया घनत्व (व्यक्ति / वर्ग कि0मी0)	
			2001	**2011**	**2001**	**2011**
1	ग्रामीण क्षेत्र	5075	607203	570342	120	112
2	न्गरीय क्षेत्र	254	89875	116929	354	460
	योग	5329	697078	687271	131	129

स्रोत – सांख्यिकी पत्रिका पौड़ी गढ़वाल 2011

तालिका संख्या–04 से स्पष्ट है कि पौड़ी गढ़वाल जनपद में ग्रामीण क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व 120 (2001) व 112 (2011) व्यक्ति / वर्ग कि0मी0 है। नगरीय क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व 354 (2001) व 460 (2011) व्यक्ति / वर्ग कि0मी0 है।

मानचित्र सं०–03

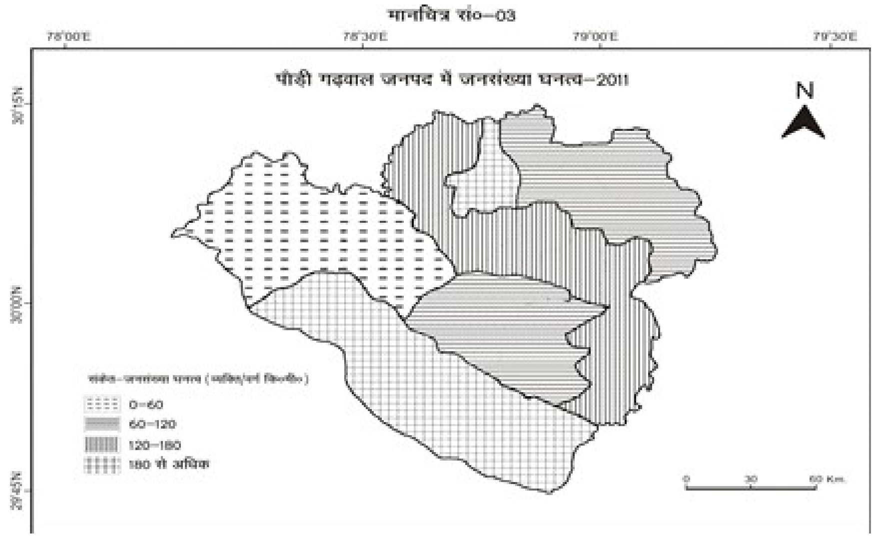

किसी दिये गये समय में जनसंख्या के आकार में परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि कहा जाता है। जनसंख्या की यह वृद्धि धनात्मक एवं ऋणात्मक दोनों ही हो सकती है। कुछ विकसित राष्ट्रों को छोड़कर विश्व के सभी राष्ट्रों में जनसंख्या की वृद्धि में सकारात्मक या धनात्मक प्रवृत्ति मिलती है। जनसंख्या की धनात्मक वृद्धि का प्रमुख कारण मृत्युदर की तुलना में जन्मदर का अधिक होना है। किसी क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि जनसंख्या में हुई प्राकृतिक वृद्धि का द्योतक है।

$$\text{जनसंख्या वृद्धि} = \frac{\text{उत्तरकाल की जनसंख्या}}{\text{पूर्वाद्ध की जनसंख्या / पूर्वाद्ध की जनसंख्या}} \times 100$$

पौड़ी गढ़वाल जनपद में जनसंख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। तालिका संख्या–05 से स्पष्ट है कि 1961 से 2001 तक जनसंख्या में लगातार वृद्धि हुई है। जनपद में सबसे अधिक जनसंख्या वृद्धि 1971–1981 दशक में हुई जबकि सबसे कम जनसंख्या वृद्धि 1991–2001 के दशक में हुई। जनपद में 2001 से 2011 के मध्य जनसंख्या में –1.41% का ह्रास हुआ है। विकासखण्ड स्तर पर पौड़ी गढ़वाल में जनसंख्या वृद्धि (2001–2011) सबसे अधिक खिर्सू (11.40%) में तथा सबसे कम दुगड्डा (1.57%) में है।

पौड़ी गढ़वाल जनपद की जनसंख्या वृद्धि को तालिका संख्या–05, 06 तथा आरेख सं0 1 में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या–06 से स्पष्ट है कि जनसंख्या वृद्धि केवल तीन (03) विकासखण्ड , थलीसैंण (+5.39%), दुगड्डा (+1.57%) तथा खिर्सू (+11.40%) में हुआ है अन्य विकासखण्डों में जनसंख्या में ह्रास हुआ है। सबसे अधिक जनसंख्या ह्रास द्वारीखाल (–19.49%) तथा सबसे कम जनसंख्या ह्रास पौड़ी (–5.87%) में है।

पौड़ी गढ़वाल जनपद में कुल जनसंख्या तथा ग्रामीण – शहरी जनसंख्या अनुपात एवं प्रतिदशक प्रतिशत में अन्तर (1961–2011)

तालिका संख्या – 05

वर्ष	आबाद ग्रामों की संख्या	जनसंख्या			प्रतिदशक प्रतिशत अन्तर		
		कुल	ग्रामीण	नगरीय	कुल	ग्रामीण	नगरीय
1961	3208	482327	454820	27507	14.12	12.38	53.47
1971	3235	553028	518181	34847	14.66	13.93	26.68
1981	3237	637877	575208	62669	15.34	11.01	79.84
1991	3109	671541	590358	81183	5.28	2.63	29.54
2001	31347	697078	607203	89875	3.8	2.85	10.71
2011	3117	687271	574568	112703	-1.41	-5.37	25.40

स्रोत – सांख्यिकी पत्रिका पौड़ी गढ़वाल (2011)

पौड़ी गढ़वाल जनपद में जनसंख्या वृद्धि/ह्रास (2001–2011)
(विकासखण्ड स्तर पर)
तालिका संख्या–06

क्र0 सं0	विकासखण्ड	जनसंख्या		वृद्धि अन्तर	जनसंख्या वृद्धि
		2001	2011		
1	कोट	25579	23754	– 1825	– 7.13
2	कल्जीखाल	33504	29287	– 4217	– 12.59
3	पौड़ी	30482	28694	– 1788	– 5.87
4	पाबो	37294	34645	– 2649	– 7.10
5	थलीसैंण	56746	59806	+ 3060	+ 5.39
6	बीरोखाल	46144	40915	– 5229	– 11.33
7	द्वारीखाल	42084	33880	– 8204	– 19.49
8	दुगड्डा	104625	106267	+ 1642	+ 1.57
9	जयहरीखाल	31590	26493	– 5097	– 16.13
10	एकेश्वर	32649	28035	– 4614	– 14.13
11	रिखणीखाल	33464	29466	– 3998	– 11.95
12	यमकेश्वर	41213	36665	– 4548	– 11.04
13	नैनीडांडा	36308	32937	– 3371	– 9.28
14	पोखड़ा	24806	21199	– 3607	– 14.54
15	खिर्सू	23995	26731	+ 2736	+ 11.40

स्रोत – सांख्यिकी पत्रिका पौड़ी गढ़वाल (2011)

पौड़ी गढ़वाल जनपद में जनसंख्या वृद्धि / ह्रास (प्रतिशत में)–2011

आरेख सं०–01

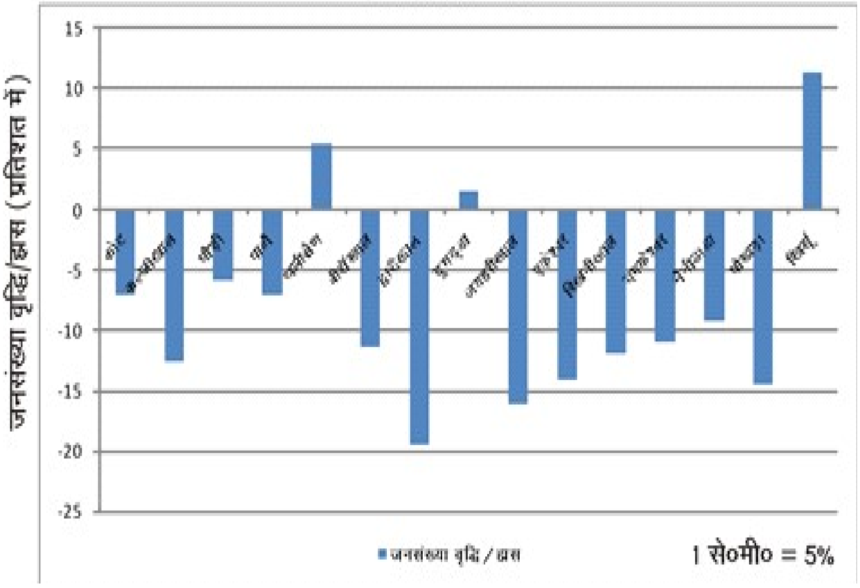

समस्यायें :–

1. विषम भौतिक धरातल, फलस्वरूप कृषि भूमि का अभाव तथा असमान जनसंख्या वितरण।
2. जनसंख्या का कुछ सीमित क्षेत्रों में जमाव तथा कुछ मुख्यतः उच्च पर्वतीय व अधिक ढाल वाले क्षेत्रों में विरल जनसंख्या या जनसंख्या विहीन क्षेत्र है।
3. जनपद में रोजगार के साधनों का अभाव, परिणामस्वरूप जनसंख्या प्रवास प्रमुख समस्या बनी है।
4. जीवन निर्वाह या परम्परागत कृषि व्यवस्था के फलस्वरूप कृषि उत्पादन का कम होना तथा क्षेत्रीय लोगों का कृषि के प्रति अलगाव का होना।
5. क्षेत्र के लोगों को तकनीकी ज्ञान व वैज्ञानिक कृषि विधियों का ज्ञान न होना।
6. पर्वतीय क्षेत्र के अनुकूल नियोजन बनाने की आवश्यकता।
7. पौड़ी के पर्वतीय क्षेत्रों में उपलब्ध कच्चे माल पर आधारित कुटीर एवं लघु उद्योगों की स्थापना न होना।
8. ग्रामीण क्षेत्रों में अब भी अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधाओं का अभाव।
9. जनपद में खनिज संसाधनों का अभाव।
10. जनपद में उपलब्ध प्राकषतिक संसाधनों का सुनियोजित तरीके से उपयोग न होना।

समाधान :–

1. पर्वतीय क्षेत्र के अनुकूल नियोजन बनाया जाना चाहिए, जिससे पर्वतीय क्षेत्रों का विकास सम्भव हो सके।
2. स्थानीय कृषि फसलों, बागावानी, पर्यटन आदि को बढ़ावा दिया जाये जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध हो सके।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधा, तकनीकी शिक्षा तथा मानव के अनुकूल विकासीय सेवाओं का विस्तार किया जाए।
4. जनपद में उपलब्ध संसाधनों पर आधारित कुटीर एवं लघु उद्योगों की स्थापना की जाए।
5. जीवन निर्वाह एवं परम्परागत कृषि व्यवस्था के स्थान पर वैज्ञानिक एवं व्यवसायिक कृषि व्यवस्था शुरू की जाए।
6. कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए उन्नत बीजों, जैविक खादों, कृषि सुविधाओं, सिंचाई आदि का विस्तार किया जाए जिससे अधिक से अधिक ग्रामीण जनसंख्या को लाभ की प्राप्ति हो सके।
7. ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराना जिससे वे अपना स्वरोजगार प्रारम्भ कर सकें।
8. जनपद में उद्योगों की स्थापना के लिए बाहरी कम्पनियों को अवसर प्रदान करना यदि वे जनपद में उपलब्ध संसाधनों पर आधारित लघु एवं कुटीर उद्योंगों की स्थापना करना चाह रहे हैं।
9. ग्रामीण क्षेत्र के कृषकों को कृषि उत्पादन को बेचने के लिए उचित मूल्य पर बाजार उपलब्ध कराना।
10. जनसंख्या प्रवास को रोकने के लिए सुनियोजित नीति–नियोजन तैयार करना।

निष्कर्ष :–

पौड़ी गढ़वाल जनपद का भू–भाग विशेषतः पर्वतीय है। जो लघु हिमालय एवं शिवालिक श्रेणी में अवस्थित है। विषम भौतिक बनावट होने के कारण इस जनपद में जनसंख्या वितरण असमान पाया जाता है। अधिक ऊंचाई तथा तीव्र ढाल वाले क्षेत्रों में जहां कम जनसंख्या या जनसंख्या विहीन है वही दूसरी ओर तराई–भाबर कोटद्वार तथा श्रीनगर गढ़वाल व पौड़ी जिले का मुख्यालय में घनी आबादी निवास करती है। साथ ही, जनपद में नदियों के किनारे घाटियों, कस्बों, विकासखण्ड मुख्यालयों, तहसील मुख्यालयों व सेवा केन्द्रों तथा सड़क मार्गों के आस–पास अधिक जनसंख्या निवास करती है। जनपद में 1961 से 2001 तक जनसंख्या में वर्षद्धि दर्ज की गयी जबकि 2001 से 2011 के दशक में जनसंख्या में –1.41% का ह्यास हुआ है। वहीं इस दशक में ग्रामीण जनसंख्या में भी –5.37% का ह्यास हुआ जबकि नगरीय क्षेत्र में +25.4% की वृद्धि हुई है। इससे स्पष्ट है कि जनसंख्या का ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर प्रवास जारी है। इसका प्रमुख कारण वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न विकासीय सुविधाओं का अभाव, रोजगार का अभाव तथा रोजगारपरक

शिक्षा व आधुनिक उन्नत तकनीकी चिकित्सा सुविधाओं का अभाव है। इसके लिए जरूरी है कि ग्रामीण क्षेत्रों में आधुनिक सुविधा सम्पन्न चिकित्सालयों की स्थापना, व्यावसायिक शिक्षा का विस्तार, कुटीर एवं लघु उद्योगों की स्थापना तथा अन्य विकासीय सुविधाओं का विस्तार किया जाए।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. जनसंख्या भूगोल– डॉ0 एस0डी0 मौर्य, शारदा पुस्तक भवन प्रयागराज इलाहाबाद उ० प्र० पृ0सं0 2,5,28,29,30,31,32,33
2. उत्तराखण्ड का भूगोल – प्रो0 डी0डी0 मैठाणी, डॉ0 गायत्री प्रसाद, डॉ0 राजेश नौटियाल, शारदा पुस्तक भवन युनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद।
3. पौड़ी गढ़वाल जनपद में जनसंख्या उप्रवास एवं क्षेत्रीय विकास का भौगोलिक विवेचन (2008) – अर्चना –पी0–एच0डी0 शोध ग्रन्थ, हे०न०ब०वि०वि० श्रीनगर गढ़वाल।
4. अर्थ एवं संख्या पत्रिका पौड़ी गढ़वाल (2011), उत्तराखण्ड।
5. भारत का भूगोल – डॉ0 अलका गौतम, शारदा पुस्तक भवन प्रयागराज इलाहाबाद उ० प्र०।
6. जनपद पौड़ी गढ़वाल में मानव संसाधन और आर्थिक विकास का स्थानिक विश्लेशण (1998)–तौफिक अहमद, पी0–एच0डी0 शोध ग्रन्थ हे०न०ब०वि०वि० श्रीनगर गढ़वाल।
7. भारत का भूगोल – डॉ0 चर्तुभुज मामोरिया, साहित्य पुस्तक भवन आगरा उ०प्र०।
8. उत्तराखण्ड सम्पूर्ण अध्ययन–विद्यादत्त बलूनी, ARIHANT PUBLICATIONS
9. हिमालय का वृहद प्रादेशिक भूगोल– डॉ0एस0सी0 खर्कवाल, बिन्सर पब्लिकेशन देहरादून उत्तराखण्ड।